आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव'

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 13 अंक ▸ 164 मुद्रण तारीख ▸ 1 अगस्त, 2025 कुल पृष्ठ ▸ 20

गुरू वंदना से महकी गुरू पूर्णिमा

जो चल न पाएं - उनको चलाएं
सेवा का एक पौधा आप ऊगाएं

कृपया मदद करें

जीवन में हताश दिव्यांगों की

Donate Now

एक कृत्रिम
अंग सहयोग
10,000/-

सेवा सौभाग्य

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 13
अंक ▸ 164 कुल पृष्ठ ▸ 20

मुद्रण तारीख ▸ 1 अगस्त, 2025

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web ▸ www.spdtrust.org
E-mail ▸ info@spdtrust.org

Seva Soubhagya
Print Date 1 August, 2025
Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404
Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 20 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस एवं
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

क्षमा खोले, मोक्ष द्वार

मुरली की तान पूर्ण आनन्द

दु:ख से निकल, नई राह पर निकिता

गुरू वंदना से महकी गुरूपूर्णिमा

दिव्यांगों को मिली जीवन का नया सफर

दु:खी आए, सुखी लौटे

संघर्ष से उत्कर्ष

मुश्किलों और चुनौतियों से निजात पाने के लिए सही दृष्टिकोण और आत्मशुद्धिकरण की आवश्यकता होती है। कठिन परिस्थितियां केवल हमारे मार्ग की बाधा नहीं, बल्कि वे जीवन का एक अहम हिस्सा हैं, जो हमें अपनी असली शक्ति और क्षमता से रूबरू कराती हैं।

जब हम जीवन की कठिनाइयों से गुंजरते हैं तो हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन की जरूरत होती है, क्यों कि किसी भी मुश्किल परिस्थिति में एक सकारात्मक सोच ही हमारा आगे का मार्ग दर्शन कर सकती है। यह सोच हमें अहसास कराती है कि दुनिया में हमारी मुश्किलों से भी ज्यादा कठिन हालातों में असंख्य लोग जी रहे हैं और हालात को बदलने के लिए हौसला बनाए हुए हैं। कोई भी समस्या इतनी बड़ी नहीं होती, जितना हम समझते हैं। कठिन हालातों को हमें अपनी बेहतरी के लिए एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं तो यह समय हमारी आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाने का होता हैं। इस बात को हमारे दिव्यांग भाई–बहिनों को भी समझने की जरूरत है। उनमें यदि कोई शारीरिक अक्षमता है तो कुदरत ने उन्हें ऐसी क्षमताओं से भी नवाजा है, जिनसे सामान्य, सकलांग व्यक्ति भी वंचित हैं। इन अनूठी क्षमताओं का प्रदर्शन हमारे अनेक दिव्यांग भाई–बहिनों ने विविध क्षेत्रों में किया भी है। जरूरत इस बात की है कि साहस होना चाहिए। यदि हम विपरीत परिस्थितियों का सामना नहीं करते, तो वे हमारे भीतर एक अवचेतना चोट के रूप में अदृश्य रहती हैं और व्यक्तित्व निर्माण में बाधक बनी रहती हैं। हमें उन परिस्थितियों का सामना कर उन्हें समाप्त करने की जरूरत है, ताकि हम सचमुच में उबर सकें, राहत अनुभव कर सकें।

कठिन समय केवल चुनौतियां ही नहीं हैं, बल्कि आत्मशुद्धिकरण का एक माध्यम भी है। यह हमें अपने भीतर की नकारात्मकताओं को खत्म करने और मौलिक प्रतिभा को सामने लाने का मौका देता है। हमें अपनी आत्मिक शक्ति से पहचान करने का अवसर देता है। अतएव हमें अपनी मुश्किलों का सामना न सिर्फ साहस के साथ करना है, बल्कि उन्हें समझने और उनसे सीखने का प्रयास भी करना है। यह हमें जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करता है और अपने भीतर की असली ताकत से रूबरू कराता है।

जीवन में सुख और दुख दोनों अनिवार्य हैं, दोनों ही हमें अपनी विकास यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए कुछ न कुछ संदेश देते हैं। सुख में हमें आभार और प्रसन्नता का अहसास होता है, जबकि दुःख में हम अपनी क्षमता और सहनशीलता को हासिल करते हैं। जीवन के उतार–चढ़ाव हमें यह सिखाते हैं कि कभी न हारें, क्योंकि हर कठिनाई और चुनौती हमें और अधिक मजबूत बनाती है। ठीक उसी तरह जैसे सोना आग में तपकर और अधिक चमक उठता है।

सेवक प्रशान्त भैया

मुक्त मन में ही सत्संग का अंकुर

श्रेष्ठ विचारों और शुभ भावनाओं के साथ अपने आसपास के लोगों से सामीप्यता और संवाद ही सत्संग है। सत्संग से व्यक्ति जीवन के सही अर्थ को समझने लगता है। इससे व्यक्ति की चेतना बंधन मुक्त होकर सबके कल्याण में प्रवृत्त होने लगती है। ठीक राजा जनक की तरह।

जीवन को 'सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम्' से परिपूर्ण रखने के लिए सत्संग आवश्यक है। इससे सद्विचार, विवेक का जागरण और लोक कल्याण का पथ प्रशस्त होकर ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करने में मदद मिलती है। सत्संग से व्यक्ति जीवन के सही अर्थ को समझने लगता है। वैदिक संस्कृति में तो सत्संग को दैनंदिन जीवन का आवश्यक हिस्सा कहा गया है। कथा–कीर्तन, यज्ञायोजन, शास्त्र वाचन और प्रवचन इसी के स्वरूप हैं।

एक बार राजा जनक ने सत्संग का आयोजन किया। उसी दौरान एक काला भयंकर विषधारी भी उपस्थित हुआ। आयोजन के मार्गद्रष्टा ऋषि अष्टावक्र ने योग बल से उस सर्प का अतीत ज्ञात कर सभाजनों से कहा–'भयभीत न हों, यह हमारे भूतपूर्व सम्राट राजा अज हैं।' सत्संग की पूर्णाहूति होते–होते सर्प की जगह एक देवपुरूष की आकृति उभर आई। जिसने आगे बढ़कर राजा जनक की ललाट चूमते हुए उनसे कहा– 'पुत्र हो तो तुम जैसा! तुम्हारे सत्संग आयोजन और उसमें मुनि अष्टावक्र जी के पावन प्रवचन सुनने से मुझे आज विषधर की दुखद् योनि से छुटकारा मिल पाया है।' सत्संग के पुण्य से राजा जनक को अपने अन्य पूर्वजों के दर्शन की इच्छा हुई और वे अपने योग बल से यमपुरी पहुंचे। यमराज ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया– कि 'आप सीधे स्वर्गलोक में प्रवेश नही कर सकते। नरक के रास्ते ही वहां जाना होगा' उन्होंने बात मान ली। उन्हे नरक – स्वर्ग के मध्य मार्ग पर सुनाई पड़ रहा करूण क्रंदन कुछ ही क्षणों बाद 'राजा जनक के जयघोष' में परिवर्तित हो गया। यमदूत बोले – महाराज आपने गुरूदीक्षा प्राप्त कर गुरूतत्व व आत्मतत्व को जान लिया है, तदर्थ आपको छूकर बहने वाली वायु नरकवासियों को पाप–ताप से शीतलता प्रदान कर रही है। इसीलिए वे आपकी जयकार कर रहे हैं। जनक ने यमदूतों से कहा – 'यदि मेरे यहां ठहरने से उन्हें शांति मिलती है, तो मैं यहीं रूक जाता हूँ।' तभी नरक के अधिष्ठाता ने वहां आकर उनसे कहा–'राजन! आप पुण्यात्मा हैं अतएव यहां अधिक देर नहीं रूक सकते। कृपया आप पूर्वज दर्शन हेतु स्वर्ग की ओर प्रस्थान करें। जनक बोले–यदि मेरे कारण इनके पाप–ताप का हरण होता है तो मैं अपने समस्त पुण्य इन्हें देने को सज्ज हूँ। उसी समय स्वयं यमराज भी वहां उपस्थित हुए। उन्होंने राजा से कहा – 'राजन! इनके कल्याण के लिए आपने इन्हे अपने जो पुण्य अर्पित किए हैं, उससे आपको महापुण्य की प्राप्ति हुई है।' राजा ने प्रत्युत्तर में कहा–'तो मैं अपना महापुण्य भी इन्हे अर्पित करता हूँ।' तभी बैकुंठ से साक्षात नारायण वहां पधारे और बोले –'जनक! अब तो तुम्हे परम पुण्य भी प्राप्त हो गया है। जहां तुम्हारे जैसे महात्मा हों, वहीं मेरा बैकुंठ बन जाता है।'

बंधुओं! आप भी सत्संग का संकल्प करें और जीवन को सार्थकता प्रदान कर अपने जन्म को धन्य करें। जय नारायण!

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

क्षमा खोले मोक्ष द्वार

क्षमा ही मन की शांति का मूल है। दान–पुण्य, सेवा, परोपकार, व्रत–उपवास सब कुछ क्षमा से ही सार्थक होते हैं। हर मानव में अपने जीवन को निर्मल– निश्छल और सुख–शांति से परिपूर्ण करने की शाक्ति है। इसी आत्मशाक्ति के उपयोग की साधना का पर्व है–पर्युषण।

जैन धर्म में पर्युषण का खास महत्व है। आठ दिन चलने वाले इस पर्व के अन्तिम दिन भाद्रपद शुक्ल पंचमी को क्षमा, मैत्री और परस्पर सद्भाव बढ़ाने वाला पर्व संवत्सरी मनाया जाता है। जैन ग्रंथों के अनुसार इस दिन प्रकृति में अहिंसा और मानव में करूणा का प्रवेश हुआ था। सभ्य–संस्कृति के प्रारंभ का दिन मानव मात्र को संदेश देता है कि अपने दिलों से वैर–भाव मिटाकर प्रेम और भाईचारा को जीवन–व्यवहार में लाएं। यह संवत् अर्थात वर्ष का सबसे पवित्र दिन होता है। इस पर्व को जैन साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाएं ज्ञान, ध्यान, त्याग और तप के साथ मनाते हैं। वर्ष भर में की हुई भूलों और गलतियों के लिए क्षमा याचना करते हैं।

संवत्सरी पर्व संदेश देता है कि व्यक्ति के जीवन में क्षमा का भाव हर दिन,हर घड़ी और हर पल रहना ही चाहिए। क्षमा प्राणी मात्र का धर्म है। क्षमा के बिना मन में शांति, परिवार में प्रेम और समाज में भाईचारा रह नहीं सकता।

आठ दिनों तक जैन साधु–साध्वियों के सानिध्य में श्रावक–श्राविकाएं आत्मिक गुणों की साधना करते हैं। यह पर्व आत्मा की चैतन्य ऊर्जा को प्रकट करने का माध्यम है। आत्मशुद्धि की जो प्रक्रिया इन आठ दिनों में अपनाई जाती है, उसे पूर्णता प्राप्त होती है, संवत्सरी को। जब परस्पर क्षमा–याचना कर व्यक्ति एक तरह से बंधन मुक्त हो जाता है। मुक्त होने का बस एक ही तरीका है– क्षमा। जिस तरह रोजाना घर– दुकान की सफाई की जाती है, उसी तरह आत्मा को साफ रखना भी जरूरी है। बेहतर तो यही है कि हम दिनभर की गलतियों और भूलों की क्षमा– आलोचना उसी दिन कर लें। त्योहार पर जैसे घर भर की सफाई का विशेष अभियान चलता है, उसी तरह वर्ष भर में की गई गलतियों व भूलों की क्षमा के लिए पर्युषण के आठवें दिन संवत्सरी के रूप में क्षमा–याचना का यह विशेष अवसर होता है। दरअसल पर्युषण पर्व आत्मा को निर्मलता और उत्कृष्टता की ओर ले जाने वाली यात्रा है।कर्मों को आत्मा तक आने से रोकना और पहले आ चुके कर्मों की निर्जरा करना इस यात्रा को संभव बनाने वाले कदम हैं। मनुष्य को दो बातें जितनी जल्दी हो सकें भूल जाना चाहिए। एक तो यह कि उसने कभी किसी के साथ भलाई अथवा मदद की। दूसरी बात किसी ने कभी उसके साथ बुरा किया।

किसी के साथ भलाई की बात नहीं भूलेंगे तो अहंकार बढ़ता जाएगा। मदद के बदले मदद की इच्छा जन्म लेगी। फिर मदद न मिली तो क्रोध आएगा। परोपकार से विश्वास हटेगा। सम्बंध खराब होंगे और दुःख की अनुभूति से जीवन की सार्थकता कम होगी। इसी तरह किसी ने आपके साथ बुरा किया। इसे भी तत्क्षण भूलना जरूरी है। नहीं भूलेंगे तो वैर–भाव विकसित होगा। गांठ दिनोंदिन मजबूत होती जाएगी। आन्तरिक चोट से कराह उठेंगे। पीड़ा बढ़ती जाएगी। अतएव ये बातें भूलें। अपनी गलतियों को सुधारें और दूसरों की गलतियां ध्यान में आने पर उन्हें क्षमा कर दें। 'क्षमा वीरस्य भूषणं' क्षमा करना तो वीरों को सदैव उसी तरह शोभा देता है, जैसे आभूषण व्यक्ति के सौन्दर्य को बढ़ाता है।

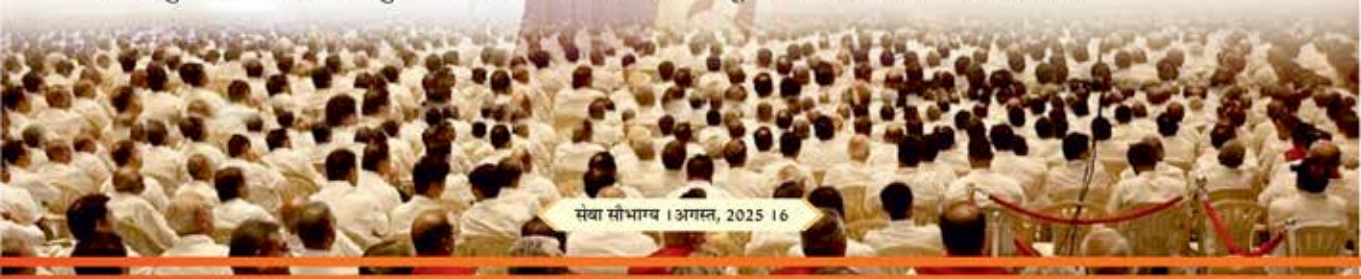

मुरली की तान में पूर्ण आनन्द

श्रीकृष्ण का अवतरण एक अभूतपूर्व घटना थी। उन्होंने मनुष्य को कर्म का संदेश देते हुए स्वयं को सर्वश्रेष्ठ रूप में अभिव्यक्त करने की प्रेरणा दी। उनके जीवन की विविध लीलाएं हर चुनौती को स्वीकार कर उस पर जीत की मोहर लगाने का विश्वास देती हैं। उनका हर कर्म मानव कल्याण को समर्पित रहा।

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म सृष्टि के विकास की एक शुभ घटना है। उनका सम्पूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति और दर्शन का सार है। वे गीता का उपदेश देने वाले भारतीय दर्शन के कोई व्याख्याकार ही नहीं हैं 'वरन् उसे जीवन में साकार करने वाले आदर्श पुरूष भी हैं। सोलह कलाओं में पूर्णावतार श्रीकृष्ण को शब्दों में बांध पाना उतना ही मुश्किल है, जितना सागर की लहरों को बाहों मे समेट लेना। संसार को ज्ञान, कर्म और भक्तियोग की दिव्य ज्योति का दर्शन कराने वाले इस महामानव का जन्म भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को हुआ था। अवतरण से लेकर लोक लीला संवरण तक उनका हर कार्य मानवता के कल्याण के लिए था। श्रीकृष्ण का जीवन हमें कर्म करने की प्रेरणा देता है। वे कहते थे कर्म करो, फल की आशा छोड़ दो। कर्म की प्रकृति के आधार पर फल तो मिलना ही है। श्रीकृष्ण के जीवन के विविध आयाम हैं। माखन चोर, गोपालक, प्रेमी, योद्धा, संगठक, संरक्षक, शासक, प्रशासक, राजा, योगी, मनीषी, चिंतक, सन्यासी, लिप्त–निर्लिप्त और इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ। वे अजन्मा होकर भी पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। मृत्युजंय होने पर भी मुत्यु का वरण करते हैं। सर्वशक्तिमान होने पर भी बन्दीगृह में जन्म लेते हैं और राजपुत्र होने पर भी ग्वालों के बीच बचपन बिताते हैं। उन्होंने अपने अमर गीता ज्ञान की बदौलत ऐसे जीवन सूत्रों को प्रतिपादित किया जो इस कलियुग में भी पूर्ण प्रासंगिक हैं।

युगनायक श्रीकृष्ण ने असुरत्व के विनाश और देवत्व के संरक्षण के लिए धरती पर अवतार लेकर समग्र क्रांति का बिगुल बजाया और अपने सम्मोहक व्यक्तित्व व अनूठे तथा न्यायप्रिय आचरण से पथभ्रष्ट समाज को सही दिशा दी। उनकी लीलाएं बताती हैं कि व्यक्ति और समाज आसुरी (दुष्ट) शक्तियों का हनन तभी कर सकता है, जब कृष्णरूपी आत्म तत्व चेतन में विराजमान हो। सामाजिक, आध्यात्मिक व राजनैतिक किसी भी दृष्टि से देखें तो पाएंगे कि कृष्ण जैसा समाज उद्धारक कोई दूसरा नहीं हुआ। उनका जीवन सिखाता है कि कैसे विषमताओं के बीच महान बना जा सकता है। गाय को 'माता' का दर्जा सर्वप्रथम उन्होंने ही दिया। उनको 'गोपाल' सम्बोधन अत्यन्त प्रिय था। एक भाई (बलराम) हल संभाले और दूसरा गोपालन करे, भारत की भौतिक उन्नति का यह मूलमंत्र आज भी सार्थक व प्रासंगिक बना हुआ है। महाभारत मूलरूप से श्रीकृष्ण के जीवन की यशोगाथा है। उन्होंने तत्कालीन विश्व के सबसे बड़े और भयंकर युद्ध को सार्थक दिशा दी।

सहारे का मोहताज नहीं दिव्यांशु

स्थान: साहरगांव, पूर्णिया (बिहार) **नाम:** दिव्यांशु (उम्र–5 वर्ष) **रोग:** जन्मजात टेढ़े पैर

प्रारंभिक अवस्था

सुधार का स्वरूप

जन्म के समय से ही दिव्यांशु के दोनों पैर टेढ़े थे और एड़ियां अंदर की ओर मुड़ी हुई थीं। माता–पिता के लिए यह एक कठिन समय था। "क्या हमारा बेटा कभी चल पाएगा?"

नई उम्मीद: नारायण सेवा संस्थान

5 मार्च 2025 को दिव्यांशु के माता–पिता नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर पहुंचे। जाँच के बाद डॉक्टरों ने 8 मार्च को पहला और 13 अप्रैल को दूसरा सफल ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के कुछ ही हफ्तों में दिव्यांशु ने अपने पैरों पर खड़ा होना शुरू किया। 31 मई को पुनः संस्थान आकर फॉलोअप जाँच करवाई गई, जिसमें डॉक्टरों ने आशातीत सुधार बताया।

सक्षम दिव्यांशु

अब दिव्यांशु बिना सहारे के चलने में सक्षम है, उसकी आँखों में आत्मविश्वास है और चेहरे पर मुस्कान। उसके माता–पिता का कहना है – "संस्थान ने हमारे बेटे को नया जीवन दिया। सिर्फ चलना ही नहीं, आत्मबल भी दिया।"

संस्था का उद्देश्य हर दिव्यांग को सक्षम बनाना है-तन से भी, मन से भी।

दु:ख से निकल, नई राह पर निकिता

'सामने ढेरों चुनौतियाँ थीं, दु:ख, अनिश्चित भविष्य और गरीबी। लेकिन हिम्मत नहीं हारी। आज मैं अपने पांव पर खड़ी हूँ और आत्मनिर्भर भी। यह कहना है नारायण सेवा संस्थान के सिलाई प्रशिक्षण केंद्र में कार्यरत निकिता सहदेव का।

निकिता का जन्म उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद में हुआ। श्रमिक पिता वीरेश सहदेव और माता प्रवेश देवी उसके जन्म पर बहुत खुश थे। एक भाई और दो बहनों सहित पूरा परिवार मेहनत कर अपना जीवन चला रहा था। तीन साल की उम्र में निकिता बुखार से पीड़ित हुई। इलाज के दौरान उसके दोनों पांवों की हड्डियों में विकृति आ गई। इलाज में देरी और संसाधनों की कमी के कारण वह चलने–फिरने में अक्षम हो गई। कुछ समय बाद उसके पांवों में घाव होने लगे और वह बिस्तर पर आ गई। डॉक्टरों ने उसे "लाईफ लॉन्ग डिसएबिलिटी" बताया और कहा कि इलाज काफी महंगा होगा। परिवार के पास न तो पैसे थे और न ही विकल्प।

संस्थान से मिला सहारा

निकिता (25) की स्थिति ने पूरे परिवार को तोड़ दिया। वर्ष 2017 में नारायण सेवा संस्थान के नि:शुल्क इलाज की जानकारी मिलने पर पूरा परिवार उदयपुर आया। यहाँ डॉक्टर्स ने दोनों पांवों का बार–बार ऑपरेशन किया और विशेष कैलिपर्स तैयार कराए।

इसके बाद संस्थान ने निकिता को नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण दिया। पारिवारिक स्थिति को देखते हुए उसे संस्थान में ही रोजगार भी मिला। पिछले 4 वर्षों से वह सिलाई केंद्र में कार्यरत है और आत्मनिर्भर जीवन जी रही है।

हर कपड़े में बुन रही उम्मीदें

निकिता हर दिन सैकड़ों कपड़े सिलती हैं। संस्थान आने के बाद उसकी सामाजिक पहचान भी बनी। इस वर्ष उनका विवाह भी तय हुआ है। निकिता कहती हैं: "अब मेरे पांव भी हैं, पहचान भी। संस्थान ने जो दिया है, वह मेरे जीवन का सबसे बड़ा तोहफा है।"

गुरू वंदना से महकी गुरूपूर्णिमा

संस्थान के लियों का गुड़ा, सेवा महातीर्थ में 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव गणपति एवं महर्षि वेदव्यास के पूजनोपरान्त संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी 'मानव' के पाद प्रक्षालन एवं अभिनंदन के साथ उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रान्तों से आए संस्थान सहयोगी, शाखाओं के प्रभारी व संस्थान साधक–साधिकाओं की बड़ी संख्या में मौजूदगी रही। कार्यक्रम का देशभर में 'आस्था' चैनल से सीधा प्रसारण हुआ। आयोजन में दिव्यांग बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों व गुरूवंदना की प्रस्तुति दी। जरूरतमंद दिव्यांगों को कृत्रिम अंग, कैलीपर व सहायक उपकरण भी वितरित किए गए। प्रखर शिष्य व अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, ट्रस्टी श्री जगदीश जी आर्य, श्री देवेंद्र जी चौबीसा व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने मानव जी व सहसंस्थापिक श्रीमती कमला देवी जी का पगड़ी, शॉल व उपरणा पहनाकर अभिनन्दन किया। प्रशांत भैया ने कहा कि हमें गुरुदेव ने शुरू से ही सेवा का पाठ पढ़ाया और बताया कि यही सबसे श्रेष्ठ क्षेत्र है, जिसमें जीवन को सार्थक किया जा सकता है। मनुष्य के जीवन निर्माण में गुरु की न केवल प्रभावी भूमिका होती है, बल्कि उनके मार्गदर्शन से भव की समस्त बाधाएं भी हट जाती हैं। पूज्य गुरूदेव ने अपने गुरुदेव गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को नमन करते हुए अपने आशीर्वचन में कहा कि मनुष्य जन्म मिलना कई जन्मों में किए पुण्यों का सुफल है। अतएव परहित का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए। कार्यक्रम का संयोजन महिम जैन ने किया।

स्नेह और अपनत्व का संगम

संस्थान के तत्वावधान में 6 जुलाई को सेवामहातीर्थ लियों का गुड़ा में आत्मीय स्नेह मिलन सम्पन्न हुआ। जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के संस्थान सहयोगियों व शाखा संयोजकों ने भाग लिया। दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी मानव ने किया। विशिष्ट अतिथि श्री भूपेंद्र भाई पटेल व श्री वल्लभ भाई थदानी अहमदाबाद, श्री नंद किशोर गोयल व हीरालाल सुथार पाली तथा मुम्बई के श्री आदाराम भाटिया थे।

अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान अध्यक्ष सेवक श्री प्रशांत भैया ने संस्थान की 40 वर्ष की सेवा यात्रा का जिक्र करते हुए बताया कि दानवीरों के सहयोग से करीब 5 लाख दिव्यांगजन निःशुल्क सर्जरी एवं कृत्रिम अंग के सहारे खड़े होकर आत्मनिर्भर गृहस्थी चला रहे हैं। बावजूद इसके अब भी बड़ी संख्या में दिव्यांगजन प्रतीक्षारत हैं, जिनकी सर्जरी होनी है।

सम्मेलन में मध्यप्रदेश के सागर में रहने वाले दिव्यांग श्री देवेंद्र कुमार ने बताया कि संस्थान ने उन्हें न केवल ऑपरेशन के माध्यम से उसने पैरों को ताकत दी बल्कि रोजगार से जोड़कर परिवार को सम्बल भी प्रदान किया। मुरादाबाद, (उप्र) की निकिता सहदेव ने बताया कि वह जन्मजात पोलियो ग्रस्त है। घिसटकर चलती थी। लेकिन संस्थान ने उसे सर्जरी व कैलिपर्स के सहारे खड़ा ही नहीं किया बल्कि गहन सिलाई प्रशिक्षण देकर संस्थान में ही रोजगार भी प्रदान किया। जिससे वह परिवार का आर्थिक सम्बल बन सकी।

सम्मेलन में संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी मानव, अध्यक्ष सेवक श्री प्रशांत भैया, निदेशक श्रीमती वन्दना जी अग्रवल व सुश्री पलक जी ने भामाशाहों को शॉल, उपरना व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। संस्थान ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेन्द्र जी चौबीसा ने आभार व्यक्त किया जबकि श्री महिम जी जैन ने संयोजन किया। आत्मीय स्नेह मिलन में पधारने वाले महानुभावों ने दूसरे दिन श्रीनाथद्वारा में दर्शन–भ्रमण का आनंद लेकर संस्थान से विदाई ली।

1155 दिव्यांगों को मिला जीवन का नया सफर

संस्थान की ओर से पिछले दिनों मेरठ, पटना एवं लखनऊ में शिविर आयोजित कर उन भाई-बहिनों को राहत और आगे बढ़ने का हौसला दिया गया, जिन्होंने विभिन्न हादसों में अपने हाथ-पैर खो दिए थे। इन्हें अत्याधुनिक कृत्रिम अंग प्रदान करने के साथ माप भी लिए गए ताकि आगामी शिविरों में वे अपनी रुकी हुई जिन्दगी को गतिमान बना सकें। आर्थिक दृष्टि से कमजोर दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी यह एक सार्थक प्रयास है।

मेरठ

रोटरी क्लब शिवम् के सहयोग से गढ़ रोड, स्थित ला–फ्लोरा रिसोर्ट में 22 जून को आयोजित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन जांच चयन और नारायण मोड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब व कैलीपर्स माप शिविर में 317 दिव्यांगजन लाभान्वित हुए। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार में ऊर्जा राज्यमंत्री श्री राजेन्द्र जी तोमर ने किया। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री अमित अग्रवाल थे। आरएसएस के सह विभाग संचालक श्री विनोद भारती, पूर्व सांसद श्री राजेंद्र अग्रवाल, एमएलसी श्री धर्मेन्द्र भारद्वाज व श्री कमलदत्त भी मंचासीन थे। अध्यक्षता मेयर श्री हरिकांत अहलूवालिया ने की।

प्रारंभ में संस्थान ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेन्द्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत– अभिनंदन किया और संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। शिविर में संस्थान के प्रोस्थेसिस तकनीशियन एवं चिकित्सकों ने शिविर में आए दिव्यांगों की जांच कर 150 का कृत्रिम हाथ–पैर तथा 130 के लिए कैलीपर बनाने के लिए माप लिया। 37 दिव्यांगों का पोलियो सुधारात्मक सर्जरी के लिए चयन किया गया। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लड्ढ़ा थे। रोटरी क्लब के प्रोजेक्ट चेयरमैन रो.प्रतीक जैन ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि दिव्यांगजन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना ही इस शिविर के आयोजन का उद्देश्य है। इस अवसर पर रोटरी क्लब अध्यक्ष श्री सौरभ अरोड़ा, सचिव श्रीमती वर्षा जैन सहित बड़ी संख्या में रोटेरियन मौजूद थे।

पटना

दानापुर (बिहार) में मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने 29 जून को शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि–'नारायण सेवा संस्थान हमारी उस संस्कृति को आगे बढ़ा रहा है जिसमें नर सेवा को ही नारायण की सेवा माना गया है।' उन्होंने शिविर में उपस्थित करीब 470 दिव्यांगों से संवाद किया और उन्हे

आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने को कहा। शिविर के विशिष्ट अतिथि भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं दीघा के विधायक डॉ. संजीव चौरसिया, पद्मश्री विमल जैन एवं समाज सेवी श्री विजय जैन थे। संस्थान के ट्रस्टी – निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की स्थापना से अब तक के सेवाकार्यों पर प्रकाश डाला। शिविर में 1150 से अधिक दिव्यांगजन की जांच कर 470 को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए। इन दिव्यांगों ने बाद में कृत्रिम अंग पहिनकर मंच पर राज्यपाल को सलामी भी दी। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद लड्ढ़ा, श्री रमेश शर्मा व श्री संदीप भटनागर थे। संचालन महिम जैन ने किया।

लखनऊ

उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह ने लखनऊ में आयोजित निःशुल्क कृत्रिम अंग व कैलीपर माप शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि दुर्घटनाओं में अपने हाथ पैर खो देने वाले भाई–बहिनों को दानवीरों के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान कृत्रिम अंग प्रदान कर उन्हें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का जो हौसला दे रहा है, वह प्रशंसनीय है। इस दिशा में राज्य सरकार भी पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। मेक ए चेंज फाउंडेशन यूके , गोल्डन जुबली और स्वामी नारायण मंदिर निल्सडन यूके के सौजन्य से गोमती नगर के एक रिसोर्ट में आयोजित इस शिविर में 165 दिव्यांगों का नारायण अत्याधुनिक कृत्रिम अंग व 120 के लिए कैलीपर बनाने का माप लिया गया जबकि 83 दिव्यांगों का पोलियो एवं अस्थि–विकृत सुधारात्मक सर्जरी के लिए चमन किया गया।

संस्थान के ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री महेश अग्रवाल, संजय खन्ना, अमित त्रिपाठी व श्रीमती प्रतिमा श्रीवास्तव मंचासीन थे। संस्थान के पीआरओ श्री भगवान प्रसाद गौड़ ने संस्थान की सेवा यात्रा की जानकारी दी। संचालन श्रीहरि प्रसाद लड्ढ़ा ने किया।

दुःखी आए, सुखी लौटे

संस्थान के उदयपुर मुख्यालय के लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ में संचालित भगवान महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय से पुराने एवं जटिल रोगों से ग्रस्त महानुभाव अत्यन्त वेदना और निरुत्साही भाव से आते हैं लेकिन सप्ताह– दो सप्ताह की चिकित्सा और भविष्य के लिए परामर्श लेकर जब घर को विदा होते हैं तो उनके चहरे पर चमक, शरीर में स्फूर्ति और प्रकट भावों में सन्तोष झलकता है। प्राकृतिक चिकित्सा से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती और दवाओं पर निर्भरता घट जाती है। इस उपचार से मानसिक शांति और सन्तुलन प्राप्त होता है।

मुम्बई से आए अजिर बिहारी शरण बताते हैं कि उन्हें उच्च रक्तचाप, पीठ दर्द और प्रोस्टेट की समस्या लम्बे समय से थी। यहां उपचार के बाद वे काफी राहत महसूस कर रहे हैं। उच्च रक्तचाप में करीब 80 प्रतिशत और पीठ दर्द में 50 प्रतिशत आराम मिला है। उन्हें यकीन है कि यहां आहार–विहार के दिए गए परामर्श से उन्हें आगे भी लाभ होगा।

इसी तरह झुंझुनू (राजस्थान) के ओमप्रकाश शर्मा (70) का कहना है कि कमर, घुटनों में दर्द और पेशाब रूक–रूक कर जलन के साथ आने की समस्या का उन्होंने बहुत इलाज कराया पर आराम नारायण सेवा संस्थान के इस चिकित्सालय में ही आने पर मिला। 10–15 दिन के प्राकृतिक उपचार से इन तमाम समस्याओं में लगभग 60 प्रतिशत सुधार हो चुका है।

उत्तर प्रदेश के ऐटा शहर से आई 40 वर्षीय ममता देवी बताती हैं कि इस कम उम्र में ही वह न जाने कैसे मधुमेह, घुटनों में दर्द, सिर में भारीपन आदि रोगों की चपेट में आ गई। बहुत इलाज के बाद भी कहीं आराम नहीं मिला। तब मुझे अपने ही शहर में एक परिचित से इस संस्थान की जानकारी मिली। यहां कुछ ही दिनों के उपचार में इन्सुलिन लेना कम हो गया। घुटनों का दर्द तो एकदम छूमन्तर ही हो गया। सिर में भारीपन की जैसी शिकायत पहले थी, वैसी अब नहीं रही। चिकित्सालय में परिवारवत् खयाल रखा जाकर विशेष आहार दिया गया। अब मेरा दिन उदासी में नहीं खुशी में व्यतीत होता है।

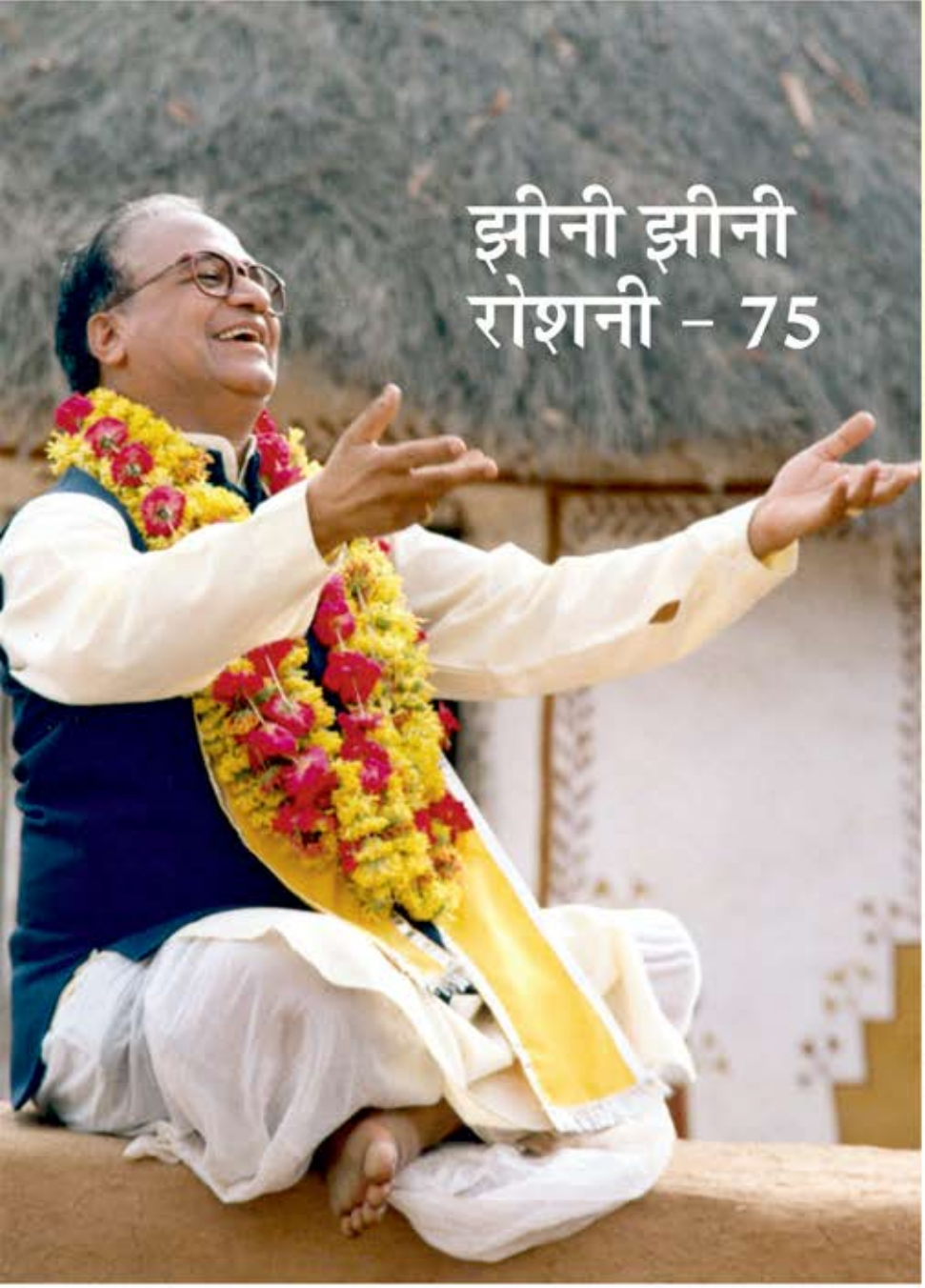

झीनी झीनी रोशनी - 75

अवधि पार होने के बाद तो दवाओं को फेंकना ही पड़ता है मगर उसके पहले घर में बेकार पड़ी ऐसी दवाईयां किसी के काम आ जाये तो इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती है। सरकारी कर्मचारियों के घरों से इस तरह की दवाईयां खूब एकत्र होने लगी। पुनर्भरण की व्यवस्था होने के कारण कर्मचारियों के घर में दवाएं रहती ही हैं। इस तरह की दवाएं भी जब भारी मात्रा में एकत्र होने लगी तो इन्हें रखने की समस्या हो गई। सेटेलाईट अस्पताल पास ही था। अब तक कैलाश जी की भी क्षेत्र में और अस्पताल में पहचान बन गई थी। उन्होंने मित्रों की मदद से एक अलमारी खरीदी और अस्पताल के डॉक्टरों से अनुमति लेकर यह अलमारी सेटेलाईट अस्पताल में ही रखवा दी। अलमारी में सभी प्रकार की दवाएं रख दी। अलमारी की एक चाबी अस्पताल में रख दी तथा एक चाबी कैलाश जी ने अपने पास रख ली। अस्पताल के डॉक्टरों को खुली छूट दे दी, कि किसी भी जरूरतमंद रोगी को दवा की आवश्यकता हो तो अलमारी से निकाल कर दे दें। यह सिलसिला चल पड़ा। कैलाश जी अपने साथियों के साथ दवाएं एकत्र कर लाते और डॉक्टर गरीब रोगियों के लिए उनका उपयोग करते रहे।

कैलाश जी जब उदयपुर के बड़े अस्पताल में जाते तो वहां निःशुल्क भोजन व्यवस्था देख उनका मन करता था कि ऐसी ही व्यवस्था सेटेलाईट अस्पताल में भी शुरू की जाए। यहां भी कम से कम 20 रोगी तो हर समय भर्ती रहते ही थे। बड़े पैमाने पर यह काम होता था, भोजन भी वहीं बनता था। यहां यह संभव नहीं था। यहां के लिए तो बाहर ही कहीं से भोजन बनवा कर लाने और वितरित करने का विकल्प था। अब यह समस्या उत्पन्न हो गई कि भोजन कौन बनाए।

दो चार लोगों से बातचीत की तो कॉलोनी में ही रहने वाले सोहनलाल विजयवर्गीय की पत्नी भोजन बना कर देने के लिए तैयार हो गई। उनसे 20 व्यक्तियों के भोजन की राशि तय कर ली। यह राशि आपस में ही एक–दूसरे से एकत्र हो जाती। कैलाश जी के साथियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अब उन्हें 5–7 लोगों का तो सतत सहयोग मिलने लगा था। कई अन्य भी थे।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीटयूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, रामदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलॉ, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 06989609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड़,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708,
10–बीची, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गॉव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पदमा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रु बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरुप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मू–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स प्ट1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई

मो. 09529920090,07073452174
09529920088 फ्लेट नं. 5/ई
सुनील कुमार डोकानिया, न्यू
ओस्वाल ओनिक्स, जैसल पार्क,
भायन्दर ईस्ट थाने, 401105

पूणे

मो. 09529920093
176153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट
गोखले नगर, पूणे–16

राजस्थान

जोधपुर

मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर
(राज) 342001

कोटा

मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं.
2–बी–5 तलवंडी,
कोटा (राज.) 324005

मध्य प्रदेश

ग्वालियर

मो. 07412060406
41 ए, न्यू शांति नगर, त्रिवेदी नर्सिंग
होम के पीछे, नई सडक, लश्कर,
ग्वालियर 474001

हरियाणा

गुरूग्राम

मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10,
राजीव नगर ईस्ट, माता रोड, सी.
आर.पी.एफ. केम्प चौक,
गुरुग्राम – 122001

हिसार

मो. 9257017593, मकान न. 2249,
सेक्टर–14, हिसार 125005

(कर्नाटक)

बेंगलुरू

मो. 09341200200,
नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम
फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी,
अपोजिट समना पार्क, एनआर
कॉलोनी, बसवानगुड़ी,
बेंगलुरु–560004

बिहार

पटना

मो. 7412060405
मकान नं.–23, किताब भवन रोड
नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नं.– 216,
बांगुर एवेन्यू, ब्लॉक–बी, ग्राउण्ड
फ्लोर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
पिन कोड–700055

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मो. 08306004811
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड,
नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मो. 09351230395,09351230393
फ्लेट नम्बर 202, गुरूकृपा अपार्टमेंट
न्यू श्रीनगर आलमबाग
लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

पंजाब

लुधियाना

मो. 07023101153
381/382, बी–17, गुलाटी डांस
क्लास के पास, भारत नगर,
लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मो. 07073452176, 08949621058
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर,
सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

असम

गुवाहाटी

मो. 09529920089
मकान नं. 07, भुवन भयं पथ,
सीपीडब्ल्यूडी कार्यालय के सामने,
चंद्रमुख सत्रिया अकादमी के पास,
पोस्ट–बामुनी मैदान, कामरूप मेट्रो,
गुवाहाटी (असम) 781009

गुजरात

सूरत

मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल
के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मो. 09529920081
म. नं.रू 1298, वैकुंठ समाज, श्री
अम्बे स्कूल के पास, वाघोड़िया रोड,
वडोदरा –390019

अहमदाबाद

मो. 09529920080, 08306008208
7/ए कपील कुंज सोसायटी विजय
नगर के पास, मेट्रो स्टेशन नारंगपुरा,
अहमदाबाद (गुजरात) 380016

दिल्ली

रोहिणी

मो. 08588835718, 08588835719,
बी–4/232 शिव शक्ति मंदिर के
पास, सेक्टर–8
रोहिणी, दिल्ली–110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101156, 07023101167
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी,
नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी
मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

नारायण नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे,
अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मो. 07073474438
मकान नं. 212653, राधानगर, भारत
पेट्रोलियम अधिकारी आवास
बिल्डिंग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़

मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर,
आगरा रोड़, अलीगढ़

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मो. 09529920087
12, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना
रोड, इंदौर–452018

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन नि:शुल्क
फिजियोथेरेपी सेंटर, बी.–350 न्यू
पंचवटी कॉलोनी,
गाजियाबाद – 201009

लोनी

मो. 07023101163
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल नि:शुल्क
फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार,
लोनी बन्थला, बिरोड़ी रोड (गोक्षधाम
मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा

मो. 07023101174
मकान न. 8/153, ई–3, न्यू लोयर
कॉलोनी, पानी की टंकी के पीछे,
आगरा (उत्तर प्रदेश)

छत्तीसगढ़

रायपुर

मो. 07869916950
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी
टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2
श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर
रायपुर, (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट

मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको
टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड,
राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी
ग्रांट, शिमला बाय पास रोड,
देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल
के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा

बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी
चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला

मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड
कोलोनी अरबन स्टेट के पास,
सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल

मो. 08696002432,7023101166
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल
रोड़, हनुमान चाटिका के पास
कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मो. 09529920089
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी
हॉस्पीटल एण्ड रिवर्स सेन्टर
बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष
मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद

मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122\123
इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता
मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजनध्नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रू.

शिक्षा से वंचित आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने में करें मदद

एक बालक का 1 माह का शिक्षा सहयोग	1,100 रू.
एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000 रू.
एक बालक का आजीवन पालनहार सहयोग (6 से 18 वर्ष)	1,00,000 रू.

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय

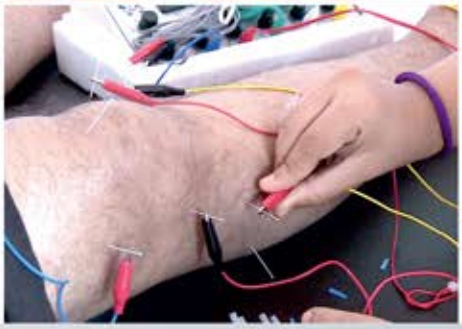

राजस्थान का कश्मीर कही जाने वाली झीलों की नगरी उदयपुर से 15 कि.मी दूर अरावली पर्वतमाला की सुरम्य वादियों के आंचल में लियों का गुड़ा गांव स्थित नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय असाध्य रोगों से ग्रस्त उन महानुभावों को आरोग्य प्रदान कर रहा है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों से निराश हो चुके थे तथा इन रोगों को अपनी नियती मानकर अभिशप्त जीवन जी रहे थे। ऐसे ही निराश महानुभावों को संस्थान में पधार कर स्वास्थ लाभ लेने का सादर आमंत्रण है।

झीलों की नगरी के बीच प्राकृतिक चिकित्सा

एक बार अवश्य पधारें

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

51 बेटियों का बसेगा संसार

दिनांक 30 व 31 अगस्त, 2025
स्थान : लियों का गुड़ा, बड़ी, उदयपुर (राज.)

कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)
₹ 1,00,000

मायरा सहयोग
₹ 51,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 21,000

भोजन सहयोग
₹ 11,000

मेहंदी और हल्दी रस्म
₹ 5,100 (प्रति जोड़ा)

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

Seva Soubhagya Print Date 1 August, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-20 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-